7

मिलेनियम अर्थात एक हज़ार वर्ष का राज्य

स्वर्ग में उठाए जाने की तरह ही यीशु का दोबारा आना पक्का है (यूहन्ना 14:3; प्रेरितों 1:11)। उसके वापस आने के बाद क्या होगा? क्या मिलेनियम शासन, अर्थात यीशु का एक हज़ार वर्ष का राज्य होगा? क्या हज़ार वर्ष में यीशु के एक हज़ार वर्ष तक राज्य करने की बात शामिल है या यह समय के काल का संकेत है? क्या वह राज्य को स्थापित करने और यरूशलेम से एक हज़ार वर्ष तक के लिए दाऊद के सिंहासन पर बैठने के लिए एक विजयी सम्राट के रूप में वापस आएगा? क्या यीशु ने परमेश्वर का राज्य स्थापित करने की जगह कलीसिया बना दी, क्योंकि यहूदियों ने उसे ठुकरा दिया था?

मिलेनियम या हज़ार वर्ष के राज्य के सम्बन्ध में सबसे अधिक चर्चा में प्रकाशितवाक्य 20:1-10 की आयतें हैं:

> फिर मैंने एक स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा; जिसके हाथ में अथाह कुंड की कुंजी, और एक बड़ी जंजीर थी। और उसने उस अजगर, अर्थात, पुराने सांप को, जो इबलीस और शैतान है; पकड़कर हज़ार वर्ष के लिए बान्ध दिया। और उसे अथाह कुंड में डालकर बन्द कर दिया ... कि वह हज़ार वर्ष के पूरे होने तक जाति-जाति के लोगों को फिर न भरमाए; इसके बाद अवश्य है, कि थोड़ी देर के लिए खोला जाए।
>
> फिर मैंने सिंहासन देखे और उन पर लोग बैठ गए, और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया; और उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे; और जिन्होंने न उस पशु की, और न उसकी मूर्ति की पूजा की थी, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी; वे जीवित होकर मसीह के साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करते रहे। और जब तक ये हज़ार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे; यह तो पहिला पुनरुत्थान है। धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहिले पुनरुत्थान का भागी है; ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे, और उसके साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे।
>
> और जब हज़ार वर्ष पूरे हो चुकेंगे; तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। और

> उन जातियों को जो पृथ्वी के चारों ओर होंगी, अर्थात गोग और मगोग को ... भरमाकर लड़ाई के लिए इकट्ठे करने को निकलेगा। और वे सारी पृथ्वी पर फैल जाएंगी; और पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर को घेर लेंगी: और आग स्वर्ग से उतरकर उन्हें भस्म करेगी। और उनका भरमाने वाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यवक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा, और वे रात-दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।

यकीनन ही, इन आयतों में एक हज़ार वर्ष के राज्य का उल्लेख है, परन्तु एक हज़ार वर्ष का राज्य है क्या? यह कब और कहां होगा? हज़ार वर्ष तक कौन राज्य करेगा? क्या हज़ार वर्ष का राज्य एक हज़ार वर्ष के लिए ही है या यह सांकेतिक है।

हज़ार वर्ष के राज्य के सम्बन्ध में तीन प्रमुख विचारों में कई भिन्नताएं पाई जाती हैं। उन्हें हज़ार वर्ष के कालक्रमिक सम्बन्धों के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है: (1) पोस्टमिलेनियलिज़्म (पूर्वसर्ग ''पोस्ट'' का अर्थ है ''पश्चात''), (2) अमिलेनियलिज़्म (''अ'' पूर्वसर्ग का अर्थ है ''नहीं''), (3) प्रिमिलेनियलिज़्म (पूर्वसर्ग ''प्रि'' का अर्थ है ''पहले'')।

पोस्टमिलेनियलिज़्म वह विचार है, जिसमें यह माना जाता है कि हज़ार वर्ष के मसीही युग का प्रतीक है, जिसमें यीशु का राज्य एक वर्तमान वास्तविकता है, जो उसके लौटने, मरे हुओं के जी उठने और अन्तिम न्याय के साथ समाप्त हो जाएगा। कुछ लोग इस पर इस बात में अलग विचार रखते हैं कि हज़ार वर्ष मसीही युग के पिछले भाग के अन्दर ही शांति और/या धार्मिकता के लम्बे काल का प्रतीक है, और इस काल के बाद यीशु वापस आ जाएगा।

अमिलेनियलिज़्म विचारधारा में माना जाता है कि ''एक हज़ार'' अंक सम्पूर्णता का प्रतीक है और इसे एक हज़ार वर्ष के राज्य के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। पोस्टमिलेनियलिस्टों की तरह, इस विचार को मानने वाले यीशु के वापस आने, जी उठने और अंतिम न्याय में विश्वास रखते हैं।

प्रिमिलेनियलिज़्म विचारधारा यह है कि यीशु सामान्य पुनरुत्थान तथा न्याय के दिन से पहले यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन पर एक हज़ार वर्ष तक राज्य करने के लिए पृथ्वी पर वापस आएगा। इस विचार के समर्थक मसीह के द्वितीय आगमन से जुड़ी घटनाओं पर विभाजित हैं। सब यह विश्वास करते हैं कि दो पुनरुत्थान होंगे: ''मिलेनियम'' से *पहले* धर्मी मृतकों का, फिर ''मिलेनियम'' *के बाद* दुष्ट मृतकों का। इस समूह में युगों में अन्तर करने वाले यह विश्वास करते हैं कि सभी भविष्यवाणियां इस्राएल के लिए हैं, कलीसिया के लिए नहीं, जिसे वे परमेश्वर का इस्राएल नहीं मानते। उन में ऐतिहासिक प्रिमिलेनियलिस्ट कलीसिया को परमेश्वर के इस्राएल के रूप में स्वीकार करते हैं।

प्रकाशितवाक्य 20:1-10 में क्या नहीं कहा गया है

यदि प्रकाशितवाक्य 20:1–10 ध्यान से पढ़ें तो पाएंगे कि प्रिमिलेनियम विचार की मूल बातें इन आयतों में नहीं मिलती हैं:

(1) इसमें यीशु के पृथ्वी पर *लौटने* की बात का उल्लेख नहीं है। उसके लौटने की बात इन आयतों में नहीं की गई है।

(2) इसमें यह नहीं कहा गया है कि यीशु *पृथ्वी पर* राज्य करेगा। राज्य के स्थान का उल्लेख नहीं है।

(3) इसमें यह नहीं कहा गया है कि *यीशु* एक हज़ार वर्ष के लिए राज्य करेगा। केवल पवित्र लोगों के राज्य के समय का उल्लेख है।

(4) इसमें यह नहीं कहा गया है कि शहीद हुए पवित्र लोग एक *सांसारिक* राज्य पर राज करेंगे। स्थान नहीं बताया गया है।

(5) इसमें यीशु के द्वितीय आगमन की *किसी बात* का उल्लेख नहीं है। इसकी कल्पना प्रिमिलेनियलिस्टों द्वारा की गई है।

(6) इसमें यह नहीं कहा गया है कि एक हज़ार वर्ष का राज्य यीशु के द्वितीय आगमन *के बाद* होगा। यह मान लिया गया है।

(7) इसमें यह नहीं कहा गया कि यीशु *यरूशलेम में* राज्य करेगा। यरूशलेम का उल्लेख ही नहीं है।

(8) इसमें यह नहीं कहा गया कि यीशु *दाऊद के सिंहासन पर* राज करेगा। दाऊद के सिंहासन का ही उल्लेख नहीं है।

(9) इसमें *यीशु के सिंहासन* का कोई उल्लेख नहीं है। शहीद हुए लोगों के सिंहासनों का उल्लेख तो है, पर यीशु के सिंहासन का नहीं। सिंहासन इस बात का प्रतीक हैं कि पवित्र लोगों को फिर लताड़ा नहीं जाएगा, बल्कि उन्हें लोगों में अगुओं के रूप में सम्मान मिलेगा और वे मसीह के सेवकों के रूप में जाने जाएंगे। इस आत्मिक अर्थ में, वे उसके साथ हज़ार वर्ष के लिए राज करेंगे अर्थात वे एक हज़ार वर्ष के लिए पृथ्वी के सिंहासनों पर राज नहीं करेंगे।

(10) इसमें यह नहीं कहा गया कि पवित्र लोगों का *शारीरिक* पुनरुत्थान होगा। केवल उनकी आत्माओं का उल्लेख है।

(11) इसमें यह नहीं कहा गया कि *सभी* धर्मी मृत मसीह के साथ राज करेंगे। शहीद हुए पवित्र लोगों के राज करने की ही बात है।

(12) इसमें *अरमगिदोन के युद्ध* की किसी बात का उल्लेख नहीं है। परमेश्वर शैतान को वह युद्ध आरम्भ करने से रोकने के लिए, जो वह पवित्र लोगों के डेरे के विरुद्ध आरम्भ करना चाहता है, आकाश से आग की बारिश भेजेगा। प्रकाशितवाक्य 16:16 में भी यह नहीं कहा गया कि यह युद्ध सचमुच होगा; केवल इसमें सेनाओं के वहां एकत्र होने का उल्लेख है: ''और उन्होंने उनको उस जगह इकट्ठा किया जो इब्रानी में हरमगिदोन कहलाता है।''

इस आयत में उन शहीदों की आत्माओं की बात है, जिन्होंने उस पशु की पूजा नहीं

की थी (आयत 4)। वे वही लोग हैं, जिन्हें यीशु के साथ एक हज़ार वर्ष के लिए राज करते हुए दिखाया गया है। इस बारे में कुछ नहीं कहा गया कि यीशु कितनी देर तक राज करेगा- केवल यही बताया गया है कि शहीद उसके साथ कब तक राज करेंगे। मैं किसी मित्र को यह बता सकता हूं कि मेरे साथ एक रिश्तेदार मेरे घर में दो साल तक रहा। इस बात से उसे यह पता चल सकता है कि मेरा रिश्तेदार मेरे साथ कितनी देर तक रहा, पर वह यह नहीं जान सकता कि घर में मैं उसके साथ कितनी देर तक रहा। यीशु के राज्य के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है। इस आयत से केवल इतना ही अनुमान लगाया जा सकता है कि यीशु कम से कम एक हज़ार वर्ष के लिए राज करेगा, इससे कम नहीं; परन्तु इस वाक्य में उसके राज्य को केवल एक हज़ार वर्ष तक सीमित नहीं किया गया है। जहां तक इस आयत से समझ आती है, उसका राज्य हज़ारों वर्ष तक हो सकता है। प्रकाशितवाक्य 20 से हम केवल शहीद हुए पवित्र लोगों के राज्य का काल बता सकते हैं, यीशु के राज्य का नहीं।

अन्य आयतें ज़्या कहती हैं

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अत्याधिक सांकेतिक भाषा का इस्तेमाल किया गया है, जिस कारण पुस्तक की कोई भी व्याख्या वचन की दूसरी आयतों की शिक्षा के साथ मेल खाती होनी आवश्यक है न कि उनके उलट। कोई भी व्याख्या जो बाइबल की दूसरी स्पष्ट शिक्षा के साथ प्रकाशितवाक्य 20 की बात को नहीं मिलाती, वह झूठी शिक्षा है। इसलिए आइए हम यह पूछें कि ''यीशु के राज्य के बारे में दूसरी आयतों में क्या कहा गया है?''

भविष्यवाणी में बताया गया था कि परमेश्वर का राज्य रोमी शासकों के दिनों में स्थापित होगा (दानिय्येल 2:44)। नबुकदनेसर के स्वप्न वाले चार राज्य बाबुल, मादा फारस, यूनान और रोम थे। उस स्वप्न में पांवों और टखनों को मिट्टी से मिले लोहे के रूप में दिखाया गया था। उस स्वप्न की दानिय्येल की व्याख्या के अनुसार, मिलावट इस बात का संकेत था कि राज्य कुछ कठोर होगा और इसका कुछ भाग भुरभुरा (दानिय्येल 2:42)। ये भाग ''एक-दूसरे मनुष्यों से मिले-जुले तो रहेंगे'' परन्तु वे ''एक न बने रहेंगे'' (दानिय्येल 2:43)। रोमी साम्राज्य का यह अच्छा चित्रण था। इस भविष्यवाणी का अर्थ यह है कि परमेश्वर का राज्य रोमी हाकिमों के दिनों में आरम्भ होना था।

राज्य के आने के लिए की गई तैयारी का अर्थ था कि यह रोमी हाकिमों के दिनों में आरम्भ होगा। यीशु, जो पृथ्वी पर रोम के शासन में होने के समय हुआ, ने घोषणा की, ''समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आया है'' (मरकुस 1:15)। ''समय पूरा हुआ है'' कहकर, यीशु यह सिखा रहा था कि भविष्यवक्ताओं द्वारा बताया गया सारा समय बीत चुका है और अब परमेश्वर का राज्य आरम्भ होने का समय आ गया है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने प्रचार किया कि राज्य निकट है (मत्ती 3:2)। यीशु ने बारह चेलों (मत्ती 10:7) और सत्तर को (लूका 10:9, 11) प्रचार करने के लिए कहा कि राज्य निकट है। यीशु ने कहा कि जब तक राज्य सामर्थ से आ न जाए, तब तक उनमें से कई लोग मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे (मरकुस 9:1)। यदि राज्य रोमी साम्राज्य के दिनों में स्थापित नहीं

हुआ था, तो दानिय्येल, यूहन्ना, बारह चेले और सत्तर चेले सब झूठे भविष्यवक्ता थे (व्यवस्थाविवरण 18:22)। यदि ये भविष्यवक्ता झूठे थे, तो सारी मसीहियत की जड़ ही खोखली है और हमारे विचार के योग्य भी नहीं है।

कोई भी प्रबन्ध जो मसीह के प्रथम आगमन को एक असफलता बताता है–और वह थी भी, यदि मसीह अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार और अपने राज्य पर राज करने के लिए ऊपर नहीं चढ़ा–अवश्य झूठा है। यदि वह पहली बार असफल हो गया, तो हम उसके दूसरी बार आने पर उसके सफल होने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं।

यीशु के राज्य की वास्तविकता तभी आरम्भ हुई, जब वह परमेश्वर के दाहिने हाथ स्वर्ग पर और पृथ्वी पर शासन करने के लिए ऊपर चढ़ा (देखें मत्ती 28:18; प्रेरितों 2:33, 34; 5:31; रोमियों 8:34; इफिसियों 1:20–23; इब्रानियों 1:3; 1 पतरस 3:22)।दानिय्येल की पूरी हुई भविष्यवाणी कि मनुष्य के पुत्र सा कोई अति प्राचीन के पास उठाया गया और उसे एक अनन्त राज्य दिया गया (दानिय्येल 7:13, 14)। जो कुछ यीशु ने सिखाया, वह धनी मनुष्य के दृष्टांत से मेल खाता था, जो स्पष्टतया उसी को दर्शाता था, जिसने अपना राज्य लेने और फिर वापस आने के लिए जाना था (लूका 19:12–15)। जब यीशु चला गया तो उसने अपना राज्य लेने के लिए उन्हें छोड़ा।

जो लोग यीशु के सांसारिक राज्य पर शासन करने की उम्मीद करते हैं, उन्हें उसके राज्य के अर्थ की समझ नहीं है। यीशु ने कहा कि उसका राज्य इस संसार का नहीं है (यूहन्ना 18:36) क्योंकि उसका शासन सांसारिक नहीं है, इसलिए यह अवश्य ही स्वर्गीय शासन है।

जकर्याह ने यीशु के विषय में भविष्यवाणी की थी, ''और उसके सिंहासन के पास एक याजक भी रहेगा'' (जकर्याह 6:13)। इब्रानियों 8:4 कहता है, ''यदि वह पृथ्वी पर होता, तो कभी याजक न होता।'' यदि वह पृथ्वी पर याजक नहीं हो सकता, तो वह पृथ्वी पर राज भी नहीं कर सकता, क्योंकि भविष्यवाणी में कहा गया था कि वह अपने सिंहासन पर एक याजक होगा। वह पृथ्वी पर याजक नहीं हो सकता, इसलिए याजक वह केवल स्वर्ग में ही हो सकता है जिसका अर्थ है कि वह केवल स्वर्ग के सिंहासन पर ही राज कर सकता है। स्वर्ग ही वह स्थान है, जहां वह ऊपर उठाया गया और जहां अब राज करता है (1 पतरस 3:22)।

पौलुस ने लिखा है कि परमेश्वर का राज्य सांसारिक राज्यों की तरह खाना–पीना नहीं, बल्कि धर्म, मिलाप और आनन्द है, जो पवित्र आत्मा से होता है (रोमियों 14:17)। भविष्यवाणी में दिखाए गए शांतिपूर्ण राज्य में एक–दूसरे के विरोधी पशुओं ने मिल–जुलकर शांति से रहना था (यशायाह 11:6, 7)। राज्य के रूप में यह उन्हीं लोगों के लिए है, जो धर्म के लिए सताए जाते हैं (मत्ती 5:10)।

राज्य का आरम्भ किसी बड़े विश्वव्यापी युद्ध से नहीं, बल्कि राई के बीज की तरह, छोटी सी शुरुआत से, होकर भोजन में छिपे खमीर की तरह माहौल को पूरी तरह से प्रभावित कर देना था (मत्ती 13:31–33)। किसी तलवार या सैनिक बल ने नहीं, बल्कि परमेश्वर के वचन ने इसके विकास और उन्नति का आधार होना था (मत्ती 13:19; लूका 8:11)। इसे ऐसे ही बढ़ना है, क्योंकि यह लोगों के मनों में परमेश्वर का शासन होना था

न कि किसी सांसारिक सरकार के द्वारा परमेश्वर का शासन। ''परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप से नहीं आता। और लोग यह न कहेंगे, कि देखो यहां है, या वहां है, क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है'' (लूका 17:20, 21)।

पौलुस द्वारा कुलुस्सियों के नाम लिखने के समय राज्य अस्तित्व में था। उसने कहा कि परमेश्वर ने मसीही लोगों को अंधकार में से निकालकर यीशु के राज्य में प्रवेश करवाया है (कुलुस्सियों 1:13), जो कि यीशु का राज्य न होने पर सम्भव नहीं हो सकता था। उसने यह भी कहा कि परमेश्वर को छोड़ सब कुछ यीशु के अधीन कर दिया गया है (1 कुरिन्थियों 15:26-28)। वर्तमान युग अर्थात मसीही युग में हम यीशु के राज्य (यूहन्ना 3:3-5) अर्थात उस राज्य के लोग बन सकते हैं जो स्वर्ग से पृथ्वी तक फैला हुआ है (मत्ती 28:18)।

वापस लौटने पर यीशु अपना राज्य आरम्भ करने के लिए नहीं आ रहा, क्योंकि वह अब भी राज कर रहा है (1 कुरिन्थियों 15:27)। दोबारा आने पर वह मुर्दों को जिलाएगा, अपने राज्य को खत्म करके उसे पिता को वापस कर देगा (1 कुरिन्थियों 15:22-28)।

वचन स्पष्ट सिखाता है कि यीशु अब स्वर्ग और पृथ्वी पर राज कर रहा है। वह अपने दोबारा आने तक राज करता रहेगा; तब अन्त होगा (1 कुरिन्थियों 15:24-27)। ऐसा वर्तमान राज्य पृथ्वी पर एक हज़ार वर्ष तक राज्य करने के लिए यीशु का समय ही नहीं रहने देता। बाइबल कहीं यह नहीं कहती कि यीशु पृथ्वी पर एक हज़ार वर्ष तक राज करने के लिए आएगा। उसका राज्य तभी आरम्भ हो गया था, जब वह अपने जी उठने के बाद पिता के पास वापस गया था। कोई भी अनुमान या व्याख्या जो इतनी आयतों के उलट है या उनका उल्लंघन करती है, गलत होगी।

प्रकाशितवाक्य 20:1-10 का क्या अर्थ है

यद्यपि हम प्रकाशितवाक्य 20:1-10 की हर बात को नहीं जान सकते, परन्तु हमें इतना निश्चय है कि इन आयतों में क्या नहीं कहा गया है। इनमें यह नहीं कहा गया है कि यीशु पृथ्वी पर यरूशलेम से दाऊद की गद्दी पर बैठकर एक हज़ार वर्ष तक राज करने के लिए आ रहा है।

यह स्पष्ट है कि इन आयतों की व्याख्या सांकेतिक रूप में होनी चाहिए, न कि शाब्दिक। कुंजी और ज़ंजीर से कोई शैतान को कैसे बांध सकता है, जो कि एक आत्मिक जीव है? क्या आत्माएं सिंहासनों पर बैठ सकती हैं? प्रकाशितवाक्य पूरे का पूरा सांकेतिक भाषा में है। इस अध्याय को अपवाद क्यों माना जाना चाहिए?

इन आयतों का अर्थ प्रकाशितवाक्य में पहले खुलना आरम्भ हो गया होगा (6:9-11)। वेदी के नीचे की आत्माएं वही हैं, जिनका उल्लेख 20:4 में सिंहासनों पर बैठे हुओं के रूप में किया गया है। वे यह प्रश्न उठाते हैं कि उनके लहू का बदला कब लिया जाएगा (6:10)। उत्तर में उन्हें बताया जाता है कि इससे पहले उन्हें थोड़ा आराम करना होगा (6:11)। उनके लहू का बदला (19:1, 2) उस बड़े नगर (17:18) बाबुल से (18:2) ले लिया गया, जो पवित्र लोगों के लहू में डूबा था (17:5, 6, 18) और जिसने जातियों पर

शासन किया था (17:15)। सताने वाले इस बड़े नगर, स्पष्टतया रोम के गिरने के बाद, (17:9, 18), मसीही लोग और क्या उम्मीद कर सकते थे? अध्याय 20 इसका उत्तर देता है। शैतान को लम्बे समय के लिए बांधा जाना था, और पवित्र लोगों ने ''वेदी के नीचे'' कुचले जाने के बजाय ''सिंहासनों'' पर राज करना था।

शैतान को बांधने का क्या अर्थ है? उसे खोलना उसके बांधे जाने का उलटा होना था। खोले जाने पर उसने तुरन्त जातियों को इकट्ठा करके उन्हें पवित्र लोगों के विरुद्ध कर दिया (20:7-9)। उसके बांधे जाने का अर्थ यह होना चाहिए कि एक हज़ार वर्ष के लिए वह जातियों को पवित्र लोगों के विरुद्ध उनके सताव के लिए न ला सके, जैसा उसने बांधे जाने से पहले किया था।

हज़ार वर्ष समय की लम्बी अवधि के लिए सांकेतिक हो सकता है। ''हज़ारों पहाड़ों के जानवर'' परमेश्वर के हैं (भजन संहिता 50:10), और परमेश्वर के आंगन का एक दिन ''कहीं के हज़ार दिन से उत्तम है'' (भजन संहिता 84:10)। निश्चय ही इन आयतों में ''एक हज़ार'' केवल बड़ी संख्या को दर्शाने के लिए है। 20:2-7 में ''एक हज़ार'' का शाब्दिक अर्थ लिया तो जा सकता है, पर संकेतों से भरी पुस्तक में होने पर किसी संख्या को शाब्दिक अर्थ में लेने का क्या तुक है?

शहीदों की आत्माएं ''सिंहासनों'' पर हैं, इस बात का संकेत है कि हज़ार वर्ष के दौरान उनका किया काम रहेगा और विजयी होगा। जब तक वे ''वेदी के नीचे'' हैं, जो कि ''थोड़ी देर'' और होना था, जब तक कि उनके साथी मसीही मर नहीं जाते (6:11)। उन्हें ''सिंहासन'' (20:4) दिए जाने का अर्थ यह होना चाहिए कि ''थोड़ी देर'' बीत चुकी थी, पवित्र लोगों का वध बंद हो गया था और सताव से विश्राम के एक हज़ार वर्ष आरम्भ हो गए थे।

इन आयतों में, यूनानी शब्द *ezesan*[1] का मूल अर्थ ''रहे'' हो सकता है। ''जीवित हुए'' क्रियाकाल से न्याय नहीं करता या संदर्भ से मेल नहीं खाता, इस कारण, यह नहीं कहा जा सकता कि ये आत्माएं ''जीवित हो गईं।'' परन्तु, ''रहीं'' सही है, क्योंकि इससे पहले यूहन्ना ने संकेत दिया था कि यही लोग ''वेदी के नीचे'' थे (6:9, 10) और होश में थे।

पौलुस ने मसीही बनने से पहले के अपने जीवन को बताते हुए इसी शब्द और क्रियाकाल का इस्तेमाल किया था। उसने कहा, ''मैं फरीसी होकर ... चला'' (प्रेरितों 26:5)। उसकी बात का अर्थ यह नहीं है कि वह फरीसी के रूप में जीवित हुआ; बल्कि इसका अर्थ है कि मसीही बनने से पहले उसका भी ''चलना'' ऐसा ही था। शहादत के कारण मसीहियत में मरने के बावजूद, मसीही लोगों के लहू का बदला लिया जाएगा। यूं कहा जाए कि मसीही समाज, शांति के लम्बे समय के लिए मसीह के साथ ''रहेगा और राज करेगा।'' ''पहले पुनरुत्थान'' (प्रकाशितवाक्य 20:5) के लोग वे हैं, जो विजय पाकर मसीह के साथ एक हज़ार वर्ष तक राज करेंगे। जैसे परमेश्वर ने इस्राएल को रहने के लिए एक जाति बनाया, चाहे वह जाति मर गई (यहेजकेल 37:1-14), वैसे ही वह मसीहियत को जीवित करता है। पवित्र लोग, जिन्हें सताव का सामना करना पड़ा, इस बात से भय खाते हो सकते हैं कि उनके विश्वास को सताकर उन्हें मिटा दिया जाएगा; पर रोम के

विनाश के बाद, जो उनके सताव का कारण बना था, उन्होंने लम्बे समय तक मसीह के साथ शांति में रहकर राज करना था।

उनके सताव को भड़काने वाले अर्थात शैतान को सीमित कर दिया गया था, पवित्र लोगों के लहू का बदला उस बड़ी नगरी के गिरने से लिया जाना था और मसीहियत ने बिना कौमी सताव की लहर के लम्बे समय तक रहना था। उसके बाद, कुछ समय के लिए छोड़े जाने पर शैतान ने जातियों को एक और लहर के लिए सताव देने की अगुआई करनी थी; परन्तु परमेश्वर ने उसके प्रयास को रोककर उसे आग की झील में फैंक देना था (20:3, 7-10)।

''दूसरी मृत्यु'' (20:6) का अर्थ एक और मृत्यु के बाद होने वाला दूसरा पुनरुत्थान नहीं है। ''दूसरी मृत्यु'' ''आग की झील'' के दण्ड का संकेत है (20:14)। पहली मृत्यु शारीरिक है और दूसरी मृत्यु आग की झील है।

सारांश

भविष्य में पृथ्वी पर यीशु के एक हज़ार वर्ष के राज के बजाय, बाइबल सिखाती है कि वह अब स्वर्ग से अपने राज्य पर राज कर रहा है, जो स्वर्ग से पृथ्वी तक फैला हुआ है। राजा यीशु अब अपने स्वर्गीय सिंहासन पर बैठा है, जहां वह पिता के पास ऊपर उठाए जाने के समय से राज कर रहा है। दोबारा वह पृथ्वी पर एक हज़ार वर्ष का राज्य आरम्भ करने के लिए नहीं, बल्कि अपने वर्तमान राज्य को समाप्त करने आएगा। कोई भी व्याख्या जो इस विचार के विपरीत है, सांकेतिक भाषा की गलत व्याख्या के आधार पर बनी है और मूल वचनों के विरुद्ध है।

टिप्पणी

[1] *Ezesan* एक सांकेतिक, कृदंत, सक्रिय क्रिया है, जिसका अर्थ *जाओ* है।